

राजनांदगांव एक जिन्दादिल शहर...

संस्कारधानी की झांकी एवं हॉकी बहुत प्रसिद्ध, हॉकी की नर्सरी के रूप में जिले की पहचान



राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स) राजनांदगांव शहर को तमिल दूसरे शहरों से विभक्त अलग है। यहां हर उत्सव एवं पर्व शिखर से ऐसे महसूस होते हैं, मानी जिंदगी के हर रंग यहां मुस्कुराते हैं। यह एक जिन्दादिल शहर है, यहां के रंगों में उत्सव एवं संस्कृति महसूस होते हैं। संस्कारधानी में चाहे गणेश चतुर्थी हो या नवरात्रि, दशहरा, दीपावली एवं अन्य पर्व इनकी अनोख रीत यहां के नर्सों में धधकती है। संस्कारधानी की झांकी एवं हॉकी बहुत प्रसिद्ध है। बात चाहे गणेश चतुर्थी के समय हॉकी की भव्य झांकी की हो या हॉकी के उन्माद खेल

को। झांकी के समय बड़ी संख्या में राजनांदगांव एवं अन्य जिलों के नागरिक यहां शामिल होते हैं। शहर के फ्लॉइडर से निकलना, शहर को निहारना, मानी एक ही नजर में पूरे शहर को आबोहवा को समझने के समान है। यहां की खामियां हैं, लोगों को मिलनसारिता तो वहीं शहरी एवं ग्रामीण परिवेश को मिली जुली संस्कृति का आभास होता है। राज्य के प्रथम अंतर्राष्ट्रीय एस्ट्रेट हॉकी स्टेडियम के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य एवं राजनांदगांव को खेल मानचित्र पर एक नई पहचान मिली है। लगभग 22 करोड़ रूपए को लागत से निर्मित

भवन अंतर्राष्ट्रीय एस्ट्रेट हॉकी स्टेडियम में हॉकी प्रतियोगिता का आयोजन होता आ रहा है। लगभग साढ़े नौ एकड़ के रकबे में निर्मित यह विशाल स्टेडियम हॉकी के खिलाड़ियों को समर्पित है। हॉकी की नर्सरी के रूप में जिले की पहचान है। यहां के हॉकी खिलाड़ी अपनी बेहतरीन खेल प्रदर्शन का प्रदर्शन करते रहे हैं। शहर के मध्य में लगभग 20 एकड़ 22 डिग्रीस में फैले दिग्विजय स्टेडियम में क्रिकेट मैदान है एवं बास्केटबाल का अंतर्राष्ट्रीय कोर्ट है। देश भर में बास्केटबाल के लिए 8 कोर्ट एक ही जगह केवल राजनांदगांव शहर में हैं। यहां बैडमिंटन के 3 इंडोर कोर्ट, 3 टेबल टेनिस, वेडोलीफिंग ट्रेनिंग सेंटर, एथलेटिक्स 400 मीटर ट्रैक, मल्टीपर्वज जिम, भारतीय खेल प्राधिकरण साईं का हॉकी तथा बास्केटबाल के लिए हॉल्ट्स हैं।

देश के तीन महान साहित्यकारों श्री गजानन माधव मुक्तिबोध, डॉ. पदमलाल पुनालाल बख्शी, डॉ. बन्धेव प्रसाद मिश्र के साहित्य, कृतियों, विचारों एवं जीवन को समझने के लिए हिन्दी साहित्य के विचारधारा के लिए मुक्तिबोध संग्रहालय दर्शनीय है। देश के तीन महान साहित्यकारों श्री गजानन माधव मुक्तिबोध कथ, डॉ. पदमलाल पुनालाल बख्शी, डॉ. बन्धेव प्रसाद मिश्र की कृतियां, पाण्डुलिपि एवं वस्तुएं सुरक्षित रखी गई हैं। उनकी रचनाएं यहां संकलित की गई हैं। उनके छात्रों के अंश तथा उनके जीवन के प्रेरक प्रसंग को जानकारी यहां अंकित है। अन्य जिलों एवं विभिन्न स्थानों से जुड़ी वस्तुएं एवं कृतियां संग्रहालय में देखना समझने चाहते हैं। राजनांदगांव में उनकी अविस्मरणीय यादों की संजोए यह शहर हिन्दी साहित्य प्रेमियों के लिए खूबों की वह कर्मभूमि गौरवपूर्ण स्थान है। राजनांदगांव जिले के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डाकुर प्यार लाल सिंह, श्री कुंज बिहारी चौध, नाचा व रंगक के प्रमुख कलाकार पचशी गोविंदराम निमलकर, छत्तीसगढ़ रंगमंच एवं नाचा की कलाकार पिताबाई मरकाम, गावन एवं अभिनय के प्रसिद्ध कलाकार श्री भैरवराज हेड्ड, चंदेरी गीता के कलाकार श्री सुमान साव, विष्णु निदेशक श्री किशोरी साहू, लोक कलाकार श्री बरसाती भैया, सुप्रसिद्ध गायिका श्रीमती कविता वासनि, कवि एवं उपन्यासकार श्री विनोद कुमार शुक्ल, पचशी लखमन बाई जैसे ख्याति प्राप्त साहित्यकारों, कलाकारों, समाजसेवी एवं प्रयुद्धजनों से जिले की विशेष पहचान है। राजनांदगांव शहर तालाबों का शहर है। जल संरक्षण के दृष्टिकोण से शहर में रानीसागर, बुद्धसागर, मोतीपुर तालाब, मरगाड़ा तालाब, बंकपुर तालाब सहित लगभग 32 से अधिक तालाब हैं। शहर का पीपल्टी प्रसिद्ध है। जहां लक्ष्मण झूल, टापी ट्रेन, नीका बिहार, बच्चों के खेलने के लिए झूले एवं खुबसूरत गार्डन आकर्षण का केंद्र है। गार्डन के दूसरे ओर पुष्प बाटिका है। वहीं ऊर्जा पार्क सुंदर उद्यान है। शहर में विभिन्न स्थानों में गार्डन होने से हरितमा का आभास होता है। जिला प्रशासन तथा नगर निगम द्वारा शहर के विभिन्न स्थानों में पीधरोपण किया जा रहा है। फ्लॉइडर के नीचे गार्डन विकसित किया गया है तथा फ्लॉइडर के अन्य भाग को व्यवस्थित तरीके से विकास के लिए उपयुक्त किया जा रहा है। वहीं छोटी-छोटी दुकानें भी लम्बाई जा रही हैं। शहर के मध्य से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 53 पर फ्लॉइडर के बने से शहर पर ट्रैफिक का दबाव कम आया है, शहर व्यवस्थित बना तथा आगमन की सुविधा बढ़ी है। शहर की डिजिटल लाईटरी विद्यार्थियों एवं पाठकों के लिए लोकायित है। छात्रावास हॉलस में गिरासतों का अंशाना मेलव रहा है। छत्तीसगढ़ में 14 गिरासत धा, उनमें से एक रियस राजनांदगांव है। गिरासत काल में राजनांदगांव एक राज्य के रूप में विकसित था एवं यहां पर सोमेश्वरी, कलवृषी एवं मराठी का शासन रहा। पूर्व में यह नंदग्राम के नाम से जाना जाता था। यहां बैरागी राजाओं का शासन था।



राजा जाता था। यहां बैरागी राजाओं का शासन था। बलभद्री मौर, रियासतकालीन विचारस, महत समुद्र हलियास रहा है। पताल परेरी मौर बर्जनी धाम महत दिग्विजय दास प्रमुख थे। इन शासकों के शासनकाल में राजाग, शिक्षा, साहित्य के क्षेत्र में इस रियासत का उल्लेखनीय योगदान रहा है। महत बलराम दास के समय में रागपुर वाटर वर्क्स रागपुर, रानी जोधपुर वाटर वर्क्स 1842, बलराम प्रेस 1899 वीरसाली मिसस की स्थापना, नगर पालिका की स्थापना, स्कूलों का निर्माण महत्वपूर्ण कार्यों में से हैं। देश की आजादी के लिए राष्ट्रीय आंदोलन में राजनांदगांव जिले को अहम भूमिका रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से शहर के प्राचीन

मंदिर शोला मंदिर, नौनी बाई मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, बलभद्री मंदिर, रियासतकालीन विचारस, महत समुद्र हलियास रहा है। पताल परेरी मौर बर्जनी धाम महत दिग्विजय दास प्रमुख थे। इन शासकों के शासनकाल में राजाग, शिक्षा, साहित्य के क्षेत्र में इस रियासत का उल्लेखनीय योगदान रहा है। महत बलराम दास के समय में रागपुर वाटर वर्क्स रागपुर, रानी जोधपुर वाटर वर्क्स 1842, बलराम प्रेस 1899 वीरसाली मिसस की स्थापना, नगर पालिका की स्थापना, स्कूलों का निर्माण महत्वपूर्ण कार्यों में से हैं। देश की आजादी के लिए राष्ट्रीय आंदोलन में राजनांदगांव जिले को अहम भूमिका रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से शहर के प्राचीन

डॉ. आर. किरण कुडुई
संस्कृत संवाक, जनसमर्थ, राजनांदगांव

धर्म समाचार....



सनातन धर्म में सभी विधि किसी न किसी देवी-देवताओं को समर्पित है। इस प्रकार हर माह के कुछ और शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि महादेव को प्रिय है। इस दिन प्रदोष व्रत किया जाता है। प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव और मां पार्वती की पूजा संस्थाकाल में होती है। साथ ही महादेव का विशेष पौजों से अभिषेक करना चाहिए। पंचांग के अनुसार, साल 2025 का पहला प्रदोष व्रत 11 जनवरी को किया जाएगा। धार्मिक मान्यता है कि इस दिन शुभ मुहूर्त में विधिपूर्वक महादेव के संग मां पार्वती की पूजा-अर्चना करने से जीवन में आ रहे संकट और दुखों से छुटकारा मिलता

है। साथ ही सभी सुखों की प्राप्ति होती है। इसके अलावा जातक को मनचाहा रोजगार प्राप्त होता है। अगर आप जीवन में खुशियां का आगमन चाहते हैं, तो साल के पहले प्रदोष व्रत के दिन राशि अनुसार भगवान शिव का अभिषेक करें। माय्यात कि एक ऐसा करने से महादेव प्रसन्न होते हैं और व्यक्ति को सभी मुद्दों पर होती हैं। आशु में जानते हैं कि किस राशि के जातक को किस पौज से महादेव का अभिषेक करना फलदायी साबित होगा।

राशि अनुसार अभिषेक
प्रदोष व्रत पर मेष राशि के जातक गंगाजल में शहद मिलाकर भगवान शिव का अभिषेक करें। इससे पूजा का पूर्ण फल प्राप्त होगा। प्रदोष व्रत पर वृषभ राशि के जातक गंगाजल में दूध मिलाकर महादेव का अभिषेक करें। इससे शिव जी प्रसन्न होंगे। प्रदोष व्रत पर मिथुन राशि के जातक कच्चे दूध में दूध मिलाकर शिव जी का अभिषेक करें। इससे चंद्र देव दूर होगा। प्रदोष व्रत पर कर्क राशि के जातक शुद्ध दही से महादेव का अभिषेक करें। इससे मनचाहा करियर प्राप्त होगा। प्रदोष व्रत पर सिंह राशि के जातक गंगाजल में लाल पुष्प मिलाकर भगवान शिव का अभिषेक करें। इससे वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा। प्रदोष व्रत पर कन्या राशि के जातक गंगे के रस से महादेव का अभिषेक करें। इससे धन के योग बनेंगे। प्रदोष व्रत पर तुला राशि के जातक पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।

प्रदोष व्रत र इन चीजों से करें भगवान शिव का अभिषेक, हीरे की तरह चमकेगी किस्मत



इससे पूजा सफल होगी। प्रदोष व्रत पर बुध राशि के जातक गंगाजल में रोली मिलाकर भगवान शिव का अभिषेक करें। इससे महादेव का आशीर्वाद प्राप्त होगा। प्रदोष व्रत पर धनु राशि के जातक दूध में केसर मिलाकर भगवान शिव का अभिषेक करें। इससे नीकरी के योग बनेंगे। प्रदोष व्रत पर मकर राशि के जातक गंगाजल में सावुत मृग मिलाकर भगवान शिव का अभिषेक करें। इससे रंके हुए काम पूरे होंगे। प्रदोष व्रत पर कुंभ राशि के जातक गंगाजल में काले तिल मिलाकर भगवान शिव का अभिषेक करें। इससे शान्ति दूर दूर होगा। प्रदोष व्रत पर मीन राशि के जातक गंगाजल में भांग के पत्ते मिलाकर भगवान शिव का अभिषेक करें। इससे सुख-समृद्धि में वृद्धि होगी।

2025 की पहली एकादशी 10 जनवरी को
शुक्रवार, 10 जनवरी को नए साल 2025 की पहली एकादशी है। शुक्रवार को चौप शुक्ल पक्ष की एकादशी है, इसका नाम पुनव है। ये व्रत वयावहार पर संतान के सुख और सींभाय की कामना से किया जाता है। जानिए इस व्रत से जुड़ी खास बातें।
एकादशी व्रत करने की सारल विधि- एकादशी व्रत करने वाले भक्तों को सुबह जादवी उठना चाहिए और खान के बाद घर के मंदिर में भगवान विष्णु का ध्यान करते हुए एकादशी व्रत और पूजा करने का संकल्प लें। भगवान विष्णु, महालक्ष्मी और बालगोपाल का अभिषेक करें। विष्णु पूजा के बाद दिनभर निगाहर रहना होता है। जो लोग भुखे नहीं रह पाते हैं, वे फल खाते हैं और दूध का सेवन करते हैं। व्रत करने के लिए मन, वचन, और कर्म से पवित्रता बनाए रखनी होती है। ऐसे कर सकते हैं विष्णु पूजा एकादशी को सुबह भगवान विष्णु, महालक्ष्मी और बाग गोपाल की पूजा करें। पूजा में जैन नमो भावसे वासुदेवाय और कृष्णाय नमः मंत्र का जप करें। भगवान को पीले फूल, तुलसी, चंदन, चावल, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पित करें। धूप-दीप जलाएं, आरती करें। भगवान के मंत्रों का जप कम से कम 108 बार करें। एकादशी की शाम को भी भगवान विष्णु की पूजा करनी चाहिए। अगले दिन द्वादशी तिथि पर विष्णु पूजा के बाद जरूरतमंद लोगों को भोजन कराएं। इसके बाद स्वयं भोजन करें। एकादशी व्रत, पूजा के साथ ही दान-पुण्य भी करता चाहिए। जरूरतमंद लोगों को दान में अन्न, वस्त्र, और दक्षिणा दें। धार्मिक मान्यता है कि जो भक्त विधि-विधान और ब्रह्म के साथ ये व्रत करते हैं उन्हें और उनकी संतान को विष्णु कृपा से सुख-समृद्धि और सींभाय मिलता है।
शुक्रवार और एकादशी के योग में शुक्र ग्रह की भी करें पूजा- 10 जनवरी को शुक्रवार और एकादशी का योग है। ऐसे में इस दिन शुक्र ग्रह की भी पूजा करनी चाहिए। शुक्र ग्रह को पूजा विशालीन रूप में की जाती है। इसलिए विशालीन का अभिषेक करें। विशालीन पर जल, दूध, पंचामृत चढ़ाएं। चंदन का लेप करें। बिल्व पत्र, हार-माला, जनेऊ, अंबरी, गुलाल, धतूरा, आंवड़े के फूल आदि पुजन सामग्री चढ़ाएं। शिव जी मिठाई का भोग लगाएं।



[illegible][illegible][illegible]

अध्यक्ष छ.ग. विधासभा में प्रवेश द्वारा (स्मारक) निर्माण की मांग के संबंध में भेंट (मुलाकात) किया गया। प्रवेश द्वारा निर्माण हेतु पूर्व में समय-समय पर कबीर पंथी समाज द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी तथा अन्य भागीदार नेताओं को अवगत कराया रह है। प्लाननीय डॉ. रमन सिंह, अध्यक्ष छ.ग. विधासभा द्वारा सुरु कबीर चौक में प्रवेश द्वारा निर्माण हेतु शासन/सहकारित प्रदान की गई। भेंट, मुलाकात के दौरान श्री विचाराम साह, संतोष साह, भवानी साह, दुर्गा साह, बंसी साह, बिंसाह राम साह, एवं भवज उन्पथित थे। इस जानकारी पर प्रेस विज्ञापन की श्री हरीश साह एवं प्रचारक ने दी।